देश विदेश के सभी भाई बहिनों प्रति दादी जानकी जी की शुभ प्रेरणायें

ओम् शान्ति 17-11-19 शान्तिवन/मधुबन

ओम् शान्ति, ओम् शान्ति, ओम् शान्ति। आज मुझे याद आया कि बहुत समय हो गया है, आप सबके पास कोई सन्देश नहीं भेजा है। तो दिल व जान से, सिक व प्रेम से सबको प्यारे बाबा की याद स्वीकार हो। हर एक ऐसा ही अनुभव करे जैसे बाबा ने हम बच्चों को याद किया। बाबा चाहता है, बच्चे अभी शान से एक जगह बैठ नहीं जावें, खड़े हो जावें। बाबा जो हम सबसे सेवा कराना चाहता है, अभी उमंग-उल्हास से कर लेवें। अपने आप दिल कहता है जो करना है अब कर लें। क्या करने का है? मैं कौन हूँ, मेरा कौन है! यही याद रहे, बोलो या सोचो, मैं आत्मा हूँ ना! मैं कौन हूँ! मेरा कौन है! मेरा भले बाबा है, बाबा कहता है मैं तेरा हूँ, तू कहो बाबा मेरा है। मेरे को तेरे में, तेरे को मेरे में कर दो। हम एक के हैं, एक हो करके रहें। दुनिया में कहाँ भी जायें, जो भी देखे, वण्डर खाये क्योंकि हमने देखा है कि हमारे अन्दर भावना अगर सच्ची है तो टाइम अनुसार मैं वहाँ पहुचूं या वो यहाँ पहुंचे, तो क्या लेन-देन होगी!

बाबा ने जो सच्चाई और प्रेम से अन्दर खुश रहने की शक्ति दी है, वो शक्ति अभी काम करे। एहसान है मीठे बाबा का, जो यह दो आंखे और मुखड़ा (मुख) बाबा ने अच्छा दिया है, वह सदा मुस्कराये। और मेरे मुख से क्या निकलेगा? बाबा आपकी कमाल है। बाबा ने हम सबके अन्दर हिम्मत, उम्मंग-उल्लास अच्छा भर दिया है, तो दिल कहता है, जो भी सेवा करनी है अभी कर लो। बिचारे कितने दु:खी, अशान्त हैं, भूखे हैं, उनको हम लोगों से सच्चाई और प्रेम का अनुभव हो। अभी ऐसी लेन-देन ज्यादा हो तब हमारी लाइफ की जो वैल्यु है, वह खुद को भी अनुभव होगी और औरों को भी उससे अच्छा फायदा होगा, यह गैरन्टी है। थैंक्यू। ओम् शान्ति।